खण्ड-(ग)

अष्टम पत्र

1. आचार्य हजारी प्रसाद जी का आलोचनात्मक सिद्धांत -
   i) अधूरा को पूर्ण और नवीन दृष्टि -
   ii) मानवतावादी दृष्टिकोण (कबीलेतारीफ)
   iii) साहित्यकार का लक्ष्य -
   iv) अतीतों की विशेषता का वर्णन -
   v) सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि -
   vi) कला जीवन के लिए हो -
   vii) वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग -
   viii) "कबीर" की पहचान -

   रचनाएँ -
   i) "हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक सिद्धांत"
   ii) "हिन्दी साहित्य की भूमिका"
   iii) "सिद्ध साहित्य"
   iv) "नाथ साहित्य"
   v) "कबीर"
   vi) "संत साहित्य"

2. पंडित नन्ददुलारे वाजपेयी जी का आलोचनात्मक सिद्धांत -
   i) छायावाद पर विशेषबल -
   ii) समन्वयवादी सिद्धांत -
   iii) लोक कल्याण की भावना पर बल -
   iv) सांस्कृतिक चेतना पर बल -
   v) रसवादी विषयक दृष्टि -
   vi) सौन्दर्यानुकूल काव्य पर बल -
   vii) जीवन में प्रेम का महत्व -

बलराम कुमार

   रचनाएँ -
   i) "हिन्दी साहित्य"
   ii) "बीसवीं शताब्दी"

Scanned with CamScanner

पत्र - 8

(i) हिन्दी साहित्य
(ii) बिसवीं शताब्दी
iii) "आधुनिक साहित्य"
iv) "जयशंकर प्रसाद"
v) "महाकवि सूरदास"
vi) "प्रेमचन्द"
vii) "निराला एवं नयासाहित्य"

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी-विभाग
डॉ. एल. के. जी. डी
कॉलेज जयपुर
असिस्टेंट प्रोफेसर

बलराम कुमार

(1) वक्रोक्ति

1. कुन्तक (वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा सिद्ध किया है)
2. "अलंकृत होने पर ही काव्य की कल्पना है" — "कुन्तक"
3. वक्रोक्ति शब्द सर्वप्रथम "काव्यशास्त्र" में भामह ने प्रयुक्त किया था।

Scanned with CamScanner